खेलो रंग हमारे संग

होली धमाल 2020

(राजस्थानी लोकप्रिय होली गीत)

मारवाड़ी सम्मेलन

कामरूप शाखा

Paint the canvas of your kitchen
with the colours of
Happiness & Good Health...

Caps®

100% DEPENDABLE... That's our guarantee !

Introducing **MULTI UTILITY** chimneys with **FIVE** essential **APPLICATIONS** that keep your kitchen safe & hygienic and your work simple, fast & easy.

CHIMNEYS WITH APPS I R.O. WATER PURIFIER I HOBS I GAS STOVE I OTHER KITCHEN APPLIANCES

Trade enq. 9435146909
www.capsindia.in Toll Free: 1800 103 4646

॥ शुभकामना संदेश ॥

मारवाड़ी सम्मेलन कामरूप शाखा द्वारा **खेलो रंग हमारे संग,** होली धमाल 2020 (राजस्थानी लोकप्रिय होली गीत) पुस्तिका का प्रकाशन हो रहा है यह अपने आप में गौरव का विषय है ।

फाल्गुन महीने में आयोजित यह होलिका पर्व भारत वर्ष के राष्ट्रीय पर्वो के से एक है जिसमें सभी भाई बंधु एक भ्रातृत्वभाव तथा विश्वबंधुत्व की भावना से एक साथ रंग गुलालों की होली को दिल में कटुता से मधुरता की होली में परिवर्तित करते हैं और इसी परंपरा को भरतवंशी लोग प्यार तथा उमंग की उत्सव के रूप पालन करते हैं।

इस **खेलो रंग हमारे संग,** होली धमाल 2020 (राजस्थानी लोकप्रिय होली गीत) के प्रकाशन के लिए संपादक मंडली, शुभचिन्तकों तथा शाखा के सभी सम्मानित सदस्यों को होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं ज्ञापित करता हूँ।

फागुन का महीना आया
आया होली का त्यौहार
नाचो गाओ रंग लगाओ
बांटो आपस में प्यार

निरंजन कुमार सीकरिया
अध्यक्ष

इस अंक में .....

1.	श्री गणपत बलकारी	3
2.	घड़वादे मेरा श्याम (धमाल)	4
3.	पगल्या की पायलड़ी भीज	5
4.	फागण आयो रे	6
5.	गोरड़ी कल सोळा सिंणगार	7
6.	बाईसा रा बीरा म्हाने पिहरीय ...	8
7.	ओर रंग दे ...	9
8.	चालो देखण न (धमाल)	10
9.	उमराव	11
10.	भर जोबण म नाव डुबगी	12
11.	के पूछो ए छोरिया	13
12.	पीळी पड़ गई रसिया	14
13.	कुव पर एकली	15
14.	तालरिया मगरिया	16
15.	बालम छोटो सो	17
16.	डाकिया	18
17.	चिरमी	19
18.	चांद चढ़्यो गिगनार	20
19.	सुवटियो	21
20.	जळ जमना रो पाणी	22
21.	चढ़ती जवानी	23
22.	मायरो	24
23.	पींपळी	25
24.	मोको लाग लो	27
25.	धरती-धौरांरी	28

श्री गणपत बलकारी

गणपत बलकारीजी फतेह म्हारी आन करो,
आन करो महाराज फतेह म्हारी आन करो,

कुण तो तुम्हारो देवा पिताजी कहावे
कुण थारी माताजी, फतेह म्हारी.....

शिव शंकर है पिता तो हमारो
माता पार्वती, फतेहं म्हारी.....

रणत-भवन सं थे आवो जी गजानन
रिद्ध-सिद्ध ल्यावोजी, फतेह म्हारी.....

गुड़ के मोदक भोग लगत है,
फुलड़ा री माळा जी फतेह म्हारी.....

सारा भगत मिल थारा गुण गाव
संकट काटो जी, फतेह म्हारी.....

घड़वादे मेरा श्याम (धमाल)

घड़वादे मेरा श्याम बाजणती बंगड़ी, र घड़वादे र
बाजणती बंगड़ी र सोना की बंगड़ी, र घड़वादे र..

रसोया म जाउँ तो बंगड़ी, रुण–झुण रुण–झुण बाज र
पिया न रिझाऊँ जद गरणाव बंगड़ी, घड़वादे र......

पाणीड़ न जाऊं तो बंगड़ी, रुण–झुण रुण–झुण बाज र
घड़ल्यो उठाऊँ जद गरणाव बंगड़ी, घड़वादे र........

महलां म जाऊँ तो बंगड़ी, रुण–झुण रुण–झुण बाज र
पिया न रिझाऊँ जद गरणाव बंगड़ी, घड़वादे र......

पगल्यां री पायलड़ी भीज

पागल्यां री पायलड़ी भीज, हाथां रो चुड़लो
कन्हैया जमना म डर लाग र, भरल्यादे घड़ल्यो
ल्यादे घड़ल्यो र, ऊंचादे घड़ल्यो

द्योराणी जेठाणी म्हारी, पीवरिये गयी
म्हार घर आजे सांवरिया, थान घालुलि दही
कन्हैया जमना म....

सासुजी न सुण कोनी, नणदुलि भोळी
तड़क आजे र सांवरिया, म्हारी सामंली पोळी
कन्हैया जमना म...

आज तो म आई र कान्हां, सखियां र भेळ
ओज्यूं मिलस्या र नन्दलाल, आपां खाटू क मेळ
कन्हैया जमना म....

घड़ल्यो भरदै सिर पर धर दे, म्हान होव ऊंवार
नैया डगमग डगमग डोल र, थे करियो परली पार
कन्हैया जमना म.....

फागण आयो रे

फागण आयो रे, आयो रे आयो
होळी खेलत नन्दलाल बिरज म फागण आयो रे
ढोलक झांझ मजीरा बाजे, और बाजे मृदंग
सांवरिया की बंशी बाजे राधा के संग नंदलाल
बिरज म फागण आयो रे
भर पिचकारी मोहन मारी, राधा हो गयी लाल
ग्वाल बाल सब हंसी उड़ावे, नाचे मिलाकर ताल
बिरज म फागण आयो रे
रंग-बिरंगी होळी आई, खूब मच्यो हुड़दंग
सखीयां सारी भीज गई और, चोली तो हो गई तंग
बिरज म फागण आयो रे
चंग बजत और रंग उड़त है और अबीर गुलाल
सखियाँ सारी खेलत-खेलत, रास रचावे नन्दलाल
बिरज म फागण आयो रे
गोपी ग्वाल सभी को देखो बिगड़ गये हैं हाल
श्यामां श्याम की जोड़ी निरखण,
कुन्तल भयो है निहा
बिरज में फागण आयो रे

गोरड़ी कर सोळा सिंणगार

गोरड़ी कर सोळा सिंणगार चाली पाणी न पणीला
पाणी न पणीहार गोरड़ी पाणी न पणीहार गोरड़ी
खाली बैठ घड़ी बेमाता, रूपा देउणियारो,
नैंण नखत सा तीखा जाणे, बिजली रो पळकारो,
ले चंदा सूं रूप उधार, चाली पाणी न पणीहार गोरड़ी
टूक्यां हाळी लाल कांचळी, गौरी के तन ओपी,
घाघरिये पर सुऔ कसुमल, चूनड़ लागै चोखी,
बांये पल्लै न फटकार, चाली पाणी न पणीहार गोरड़ी
चुड़लो, बाजूबंद बोरलो, कान सुरलिया साजे,
कड़िया पाती पग नेवरिया पड्या बिछुड़िया लाजै,
गळे मैं पैर नोलखो हार, चाली पाणी न पणीहार गोरड़ी
धड़लो भरतां मुहं देख्यो जद, पून दिया फटकारो,
पाणी धूज्यो सूरज आखड़ियो, बिजली रो पळकारो,
चेता चूक हुया मोट्यार चाली पाणी न पणीहार गोरड़ी।

मारवाड़ी सम्मेलन कामरूप शाखा
द्वारा प्रकाशित त्रिमासिक मुखपत्र
'कामरूप दर्पण'
में लेख, कविता, सुझाव, विज्ञापन आदि
देकर इस मुखपत्र की शोभा बढ़ायें।

बाईसा रा बीरा म्हान पिहरीय ले चालो सा

बाईसा रा बीरा म्हाने, पिहरीय ले चालो सा
पिहरीय री म्हान ओल्यूं आवै बाईसा रा बीरा....
घण अलबेली मीरगा, नेणी मतवाळी ए .
सासरीय में काई दुख पावो, बाईसा रा बीरा....
मायड़ थारी म्हातूं, पाणिड़ो भरावै सा,
पतळी कमर म्हारी लुळ–लुळ जाय बाईसा रा बीरा....
पाणिड़ो भरणन गोरी, पणिहारी लगाद्यो ए
पतळी कमर थारी कैयां लुळ जाय, बाईसा रा बीरा....
बेनड़ थारी म्हांसु, ऐढ़ि टेढ़ि चाले सा..
यो बरताव म्हान कैयां भाव, बाईसा रा बीरा....
बेनड़ म्हारी हरियल, बागां री कोयलड़ि ए
दिन दस रय बातो उड़ ज्यासी, बाईसा रा बीरा....
थे तो बातां रा लोभी, समझो समझाओ ना
सांची कहूं तो म्हान लाज आव, बाईसा रा बीरा....
समझा मिजाजण थारै, हिवड़े री बातां ए
नौव महीने थाळ बजवावां,
बाईसा रा बीरा....

ओर रंग दे...

ओर रंग दे छैला ओर रंग दे,
म्हारै सायबजी के दाय कोनी आयी रे लीलगर,ओर रंग दे....

अल्ला क पल्ला दादर मोर रंग दे,
म्हारे घुघटिये पर बाईसा रो बीरो रे लीलगर, ओर रंग दे...

सुसरो जी रंगायो म्हारै पीळो पोमचो,
म्हारी सासू जी क दाय कोनी आयो रे लीलगर, ओर रंग दे...

जेठ जी रंगाई म्हारै लाल चुन्दड़ी,
म्हारी जेठाणी क दाय कोनी आयी रे लीलगर, ओर रंग दे....

देवरियो रंगायो म्हार नीलो लहरीयो,
म्हारी द्योराणी क दाय कोनी आयो रे लीलगर, ओर रंग दे....

सायब जी रंगाई म्हारै हरी चुन्दड़ी
म्हारी सौतनड़ी क दाय कोनी आयी रे लीलगर, ओर रंग दे....

चालो देखण न (धमाल)

चालो देखण न बाईसा थारो बीरो नाच रे, चालो देखण न
बीरो नाच रे क, थारो भाई नाच रे –
चालो देखण न....

आ रसियां की टोळी देखो ढोलक चंग बजावै रे,
घूमर घाल सायबो यो लुळ–लुळ नाच रे,
चालो देखण न....

बणकर बींद सेवरा बांध्या, रंग म भा बराती रे
मुंछ्यां हाळी बींदणी क साग नाच रे ।
चालो देखण न....

च्यार तो चंगा की जोड़ी बाजारां म बाजै रे
गोखै बैठी गोरड़ी, चूंघट स झांक रे
चालो देखण न....

च्यार तो चंगा की जोड़ी, बागां मांही बाजै रे
फुलड़ा चुगती छोरियां, चंगा पर नाच रे
चालो देखण न....

उमराव

आभा चमक बिजळी जी कोई शीतळ बरसे मेह
छांटा लाग्या प्रेम का जी कोई भीज सारी देह
उमराव थारो पचरंग पेचो भीज म्हारा राज उमरावजी...

साजन चाल्या चाकरी जी कोई कान्ध धरी बंदूक
क तो म्हाने ले चालो जी नहीं हो जावली चूक
उमराव म्हान साग तो ले चालो म्हारा राज उमरावजी...

डूंगर उपर डूंगरी जी कोई सोनो घड़ सुनार
पायलियां तो बाजणी जी कोई बिछिया री झणकार
उमराव म्हान गळपटियो घड़वाद्यो म्हारा राज उसरावजी...

चांदी को एक बाटको जी कोई जीम भूरा भात
रोज जिमाऊं साहिबो पर जिमां दोन्यू साथ
उमराव थान पंखो ढाळ जिमाऊं म्हारा राज उमरावजी..

फूल गुलाबी पोमचो कोई पड्यो बिरंगो होय
म म्हारी मां क लाडली कोई कद मुकलावो होय
उमराव थे तो लेवण बेगा आवो म्हारा राज
उमरावजी..

भर जोबण म नाव डूबगी

भर जोबण म नाव डूबगी, तैरा दे मणियारा
तेर नाम की दो चूड़ी, मन पहरा दे मणियारा
भर जोबण म नाव डूबगी..

पटरी र पटरी रेल चलत ह, ऊपर जहाज हवाई
होळी म दोय रंडवा मरग्या, कर कर याद लुगाई
भर जोबण म नाव डूबगी..

नीम का जोबण नीम–नीम्बोळी, आम का जोबण सुवा ।
मरद का जोबण पान–सुपारी, पणिहारी का जोबण कुआ
भर जोबण म नाव डूबगी..

आधी र रात न आयो देवर, ल्यायो फूल गुलाबी
झाला देर बुलावण लाग्यो, आज्या म्हारी भाभी
भर जोबण म नाव डूबगी..

सुण र पति मेरा सुण र पति, तन बात बतायूं सारी
तेर भाई को ब्या करवादे,
कोन्या र व कुंवारा
भर जोबण म नाव डूबगी..

के पूछो ए छोरिया

के पूछो ए छोरियो, म्हार सासरिये री बात
एक घड़ी म कट जाव ए, चार पहर की रात
एक घड़ी म कट जाव.....

सासू म्हारी सिधी साधी, छोर्यो के विश्वास कर
पीढ़ ऊपर बैठी आंगण, पिया मेरा तो फेर फिर
हाथ पकड़ मेरी बैंया मरोड़ी, फेर्यो गाल पर हाथ
एक घड़ी म कट जाव....

जद सोवण का टेम हुआ, मैं सेज़ बिछावण आई
अपण पति क खिदमत खातर, दूध गिलास को ल्याई
साग म्हे तो हिल मिल सोग्या, लगा लात पर लात
एक घड़ी म कट जाव....

पिया बिना म रह न सकू ए, सुणो सहेल्यो मनकी
अब की बार मन आणो पड़्यो, आंट लगी म्हार सावणकी
सुणो सहेल्यो मरद बिना ह, औरत की के जात
एक घड़ी म कट जाव....

पीळी पड़ गई रसीया

म तो पीळी पड़ गई रसीया
बैठी पीवर माय

म तो पतळी पड़ गई रसीया
बैठी पीवर माय

सारण परली ठिकरी या, घिस-घिस पतळी होय
परदेशी की गोरड़ी कोई, झुरमुर पिंजर होय

फूल गुलाबी पोमचो, कोई पड्यो बिरंगो होय
म मेरी मां क लाडली, कोई कद मुकलावो होय

आंगण पड़ियो काचरो, कोई लावण सं गुड़जाय
बिना अक्ल को सायबो, म्हारो सेजां स उठ जाय

आंटी डोरा कांगसी, कोई शीश गुंथाबा जाय
साम मिलग्यो सायबो, म्हारी छाती धड़का खाय

डूंगर ऊपर डूंगरी जी, कोई डूंगर ऊपर कैर
कर मुकलावो छोड़दी कोई कदको काड्यो बैर

"गलत तरीके अपनाकर सफल
होने से वही बेहतर है
सही तरीके के साथ काम
करके असफल होना।"

कुव पर ऐकली

घड़ल्यो घड़ पर टोकणी ए।
ए माय मेरी गई–गई समद तळाव
कुव पर ऐकली ए....
नणद भोजाई पाणी नीसरी ए,
ए माय मेरी गई–गई समद तळाव
कुव पर ऐकली ए....
घड़ल्यो तो डूब ना ए टोकणी ए,
ए माय मेरी ईण्डूळी तो तिर–तिर जाय
कुव पर ऐकली ए....
भोजाई तो भर पाछी बावड़ी ए
ए माय मेरी नणदूली न मिली गयो श्याम
कुव पर ऐकली
ए....
गैल तो जाबाळा छोकरा र
छैला र भरीयो तो घड़ल्यो उठाय
कुव पर ऐकली ए....
भरीयो तो घड़ल्यो उठायस्यां ए
गौरी ए एक तूं बात बताय
कुव पर ऐकली ए....
क सासू क अणखावणी ए
गौरी ए के दियो पियो छिटकाय
कुव पर ऐकली ए....
ना सासू क अणखावणी ए
छैला रे परण्यो बस ह परदेश
कुव पर ऐकली ए....

तालरिया मगरिया

तालरिया मगरिया रे, मोरूं बाई लारे रैया
कोई आयो रे धोरां वाळो देश,
बीरो बिणजारो रे, मोरूं ने लागै प्यारो रे –
आयो रे धोरां वाळो देश,
बीरो बिणजारो रे....

कुण थानै बोल्या ऐ, मोरूं बाई बोलणा ।
कुण तो दिनी झीणी गाळ,
बीरो बिणजारो रे....

सासूजी बेल्या रे, मोरं बाई ने बोलणा
नणदल तो दिनी झीणी गाळ,
बीरो बिणजारो रे....

माथो तो धोयो ऐ, मोरूं बाई मेट सूं
घाल्यो ऐ चमेली वाळो तेल,
बीरो बिणजारा रे.....

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा
द्वारा संचालित स्थायी प्रकल्प
निःशुल्क स्थायी योग केंद्र
समय : सुबह 6 से 7.15 बजे तक
स्थान : हरियाणा भवन, गुवाहाटी

बालम छोटो सो

पांच बरस को मेबूड़ो, पच्चीसां ढळ गई नार
बालम छोटो सो
छोटो क मोटो गौरी मतना कहो, कोई राख मरद् की लाज
मोटो होय ज्यासी

पाणीड़ न जातां ढ़ोलो हठ पकड़्यो
म्हान गोद्यां म लेल्यो घर नार बालम....

गोद्यां म तो लेसी थारा मांय र बाप
म्हारी काया मत बाळो भरतार, बालम....

हलवायां क जातां ढ़ोलो हठ पकड्यो
म्हान लाडूडो दिरादे घर नार, बालम....

लाडूडो दिरासी थारा मांय र बाप
म्हान लाजां मत मारो भरतार, बालम....

सुनारां क जातां ढ़ोलो हठ पकड़्यो।
म्हान अंगूठी घड़ायो घर नार, बालम....

अंगूठी घड़ासी थारा माय र बाप
म्हान लाजां मत मारो भरतार, बालम....

डाकिया

डाकिया र, म्हान कागद लिख दे
कोई लिख परवानो, म्हारा साजन न

नाम ना जाणां, गांव न जाणा
सुरत ना जाणां, थारा साजन की
कोई लिख परवानो....

नाम बतास्यां, गांव बतास्यां
सुरत बतास्यां, म्हारा साजन की
कोई लिख परवानो....

नाम सुरजमल, गांव लिछमगढ़
सांवळी सुरत, म्हारा साजन की
कोई लिख परवानो....

चिरमी

गुवाड़ बिचाळ ढोला पीपळी, चिरमी रा डाळा चार
वारि जाऊं चिरमी न.....
चिरमी रा लाम्बा-लाम्बा पान, वारि जाऊं चिरमी न
चिरमी तो बाबो सारी लाडली, कोई मोत्यां बिचली लाल
वारि जाऊं चिरमी...
कठोड़ चिरमी रो सासरो, कोई कठोड़ चिरमी रो पीर
वारि जाऊं चिरमी....
जोधाणो चिरमी रो सासरो, कोई बिकाणो तो चिरमी रो पीर
वारि जाऊं चिरमी.....
चिरमी तो चाली ढोला सासर, कोई रोवण ल्याणे बिको बाप
वारि जाऊं चिरमी....
चढ़ती रो चमक्यो चुड़लो, उतरती रो चमक्यो नौसर हार
वारि जाऊं चिरमी....
चिरमी रा गोरा गोरा बाळ बारि जाऊं....
चिरमी रा लाम्बा लाम्बा केश, बारि जाऊं....
चिरमी रा मीठा-मीठा बोल, बारि जाऊं....
चिरमी रो तीखो-तीखो नाक, बारि जाऊं....

चांद चढ्यो गिगनार

चांद चढ्यो गिगनार, किरत्यां ढळ आई आधी रात
पिवजी अब तो घरां पधार,
मारूड़ी थारी बिलखे छै जी बिलखै छै
हाथा मेंहदी राचणी कोई नेणा काजळ सार्यो जी
ले दिवलो चढ्गी चोबार मरवण पलंग संवार्यो जी
बैठी मनड़ो मार, गौरी का नहीं आया भरतार॥ मारूड़ी...
ज्यूं-ज्यूं तेल बळ दिवल म, धण बाती सरकावे जी
नहीं आयो मद छकियो रसियो दिवलो नाड़ हिलावे जी
दिवले सूं झुंझळाय गोरी दिवलो दियो बुझाय॥ मारूड़ी...
सिसक-सिसक कर गौरी रोव, तकियो काळो करियो जी
ऊगत सूरज रसियो आयो, हाथ पीठ पर धरियो जी
कठ बिताई सारी रात, थान ऊग आयो परभात॥ मारूड़ी...
हाथ छिटक कर गौरी बोली अब क्यूं घरां पधार्या जी
सौतण क संग रात बिताई, कर-कर कोड सवाया जी
कठ बिताई सारी रात, थे तो कर दिन्यो परभात ॥ मारूड़ी...
ऊक-चूक मत बोलो गौरी मतना देवो ताना जी
साथिड़ा संग रात बिताई, खेल्या चोपड़ पासाजी
बठ बिताई सारी रात, म्हानं उग आयो परभात
गौरी मुस्काओजी मुस्काओजी

सुवटियो

उड़ियो र उड़ियो र, ड्योडो ड्योडो जाय, जाय रे
म्हारो सुवटियो रे, म्हारो सुवटियो
सुवटियो म्हारी लाल नगद रो बीर, बीर रे
म्हारो सुवटियो रे, म्हारो सुवटियो

बीकाण जाऊ तो सुवो, यूं कयो र सुवो यूं कयो
थारी गोरी घण न लहरिया रो च्याव, च्याव रे
म्हारो सुवटियो...

जैपुरिये जाऊ तो सुवो, यूं कयो र सुवो यूं कयो
थारी गोरी घण न चुनड़ी रो च्याव, च्याव रे
म्हारो सुवटियो...

जोधाण जाऊ तो सुवो, यूं कयो र सुवो यूं कयो
थारी गोरी घण न अंगिया रो च्याव, च्याव रे
म्हारो सुवटियो...

सीकरिये जाऊ वो सुवो, यूं कयो र सुवो यूं कयो
थारी गोरी घण न बोरल रो च्याव, च्याव रे
म्हारो सुवटियो...

जळ जमना रो पाणी

जळ जमना रो पाणी कैंया, ल्याऊं ओ रसिया
पतळी कमर म्हारी लुळ-लुळ जाय

छोटोड़ी नणदल म्हारी, पाणी कोनी ल्याव
तो घरां बैठी जुगती, लगाव ओ रसिया
पतळी कमर..

सिर पर घड़ल्यो घड़ पर मटकी
तो मटकी ऊपर कळसो कोनी, चाल ओ रसिया
पतळी कमर.....

ऊंची-ऊंची पाळ, घड़ो कोनी डूब ..
तो बीच म जाऊँ तो डर लाग ओ रसिया
पतळी कमर.....

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा
द्वारा संचालित स्थायी प्रकल्प

जूठन विरोधी
जागरूकता अभियान

उतना ही लो थाली में,
व्यर्थ न जाए नाली में ....।

चढ़ती जवानी

चढ़ती जवानी मोको, आयेड़ो टळ
आजा र परदेशी खर्ड़ा, नीम क तळ

तीजां रो त्योहार आयो, सावण क महिना म,
एकली न डर लाग, काळि–पिळि रातां म,
कड़क कड़ाकड़ बिजळी चमक, मन धड़क ॥ आजा रे...

रात न नहि आयो परण्या, जोई थारी बाटड़ली
सारी रात म दिवलो राख्यो, बूझगी सारी बातड़ली,
तकिय न राख्यो रात4, छाती क तळ ॥ आजा रे...

चढ़ती जवानी मोको, घणो कोनी आव ह,
थार आयां बिना साजन, नींद कोनी आव ह,
सेजा म सुति को म्हारो, काळजो बळ॥ आजा रे....

तावड़ो पड़ ए गोरी, खूब तगड़ो,
खेत म चालो ए मरवण, हाथ पकड़ो,
आपा दोन्यू कुश्ती लड़स्यां, खेजड़ी तळ॥ आजा रे....
आपण दोन्या म स कुण पटक

मायरो

भरदे, मायरो सांवरियां नानी बाई को, भरदे मायरो

और सगां न सांवरा महल माळीया
नरसी भगत नै टुटेड़ी टपरी
भरदो मायरो....

और सगां न सांवरा हींगळू ढोळिया
कोई नरसी भगत ने टुटेड़ी मचली
भरदो मायरो....

करमां कॉंई थारी, काकी लागै
रुच-रुच भोग लगायो सांवरा
भरदे मायरो....

अरज सुणी जद, आयो सांवरियो
कोई गाडा भर-भर ल्यायो मायरो
भरदे मायरो....

मारवाड़ी सम्मेलन, कामरूप शाखा
द्वारा संचालित स्थायी कार्यक्रम
आठगाँव चाबिपुल प्राथमिक विद्यालय
में नवीनीकरण, वृक्षारोपण

पींपळी

बाय चाल्या छा भंवर जी पींपळी जी, हांजी ढोला हो गई घेर घुमेर
बैठण की रूत चाल्या चाकरीजी, ओजी म्हारी सास सपूती रा पुत
मत नां सिधारो पूरब की चाकरी जी॥ स्थाई ।।

परण चाल्या छा भंवर जी गोरड़ी जी, हांजी ढोला हो गई जोध जवान
विलसण की रूत चाल्या चाकरी जी, ओ जी म्हारी लालनणद बाई रा बीर
मत नां सिधारो पूरब का चाकरी जी।

कुण थांरा घुड़ला भंवर जी कस दिया जी, हांजी ढोला कुण थांने कस दीनी जीन ।
कुण्यांजी रा हुकमा चाल्या–चाकरी जी, ओजी म्हारे हिवड़ा रा नौसर हार
मतना सिधारो पूरब की चाकरी जी।

रोक रुपैयो भंवर जी म बणूं जी, हां जी ढोला बण ज्याऊं पिळी पिळी म्होर
भीड़ पडै जद सायबा बरत ल्योजी, ओजी म्हारी सैजां रा सिंणगार
पिया की पियारी ने सागे ले चलो जी॥

कदेई नां ल्याया भंवर जी चूनड़ी जी, हां जी ढोला कदेइ ना करी मनवार
कदेई नां पूछी मनड़ेरी बाता जी, हां जी म्हारी लालनणद रा बीर
थां बिन गौरी ने पलक ना आवड़े जी॥

बाबोसा ने चाये भंवर जी, धन घणो जी, हां जी ढोला कपड़ेरी लोभण थारी माय
सैजां री लोभण उड़ी के गोरड़ी जी, हां जी थारी गोरी, उड़ावे काळा काग
अब घर आओ, धाई थारी नौकरी जी॥

चरखो तो लेल्यो भंवर जी रांगलो जी, हां जी ढोला पिढ़ो लाल गुलाल
मैं कातूं थे बैठ्या बिणजल्यो जी, ओजी म्हारी लालनणद रा बीर
घर आओ प्यारी ने पलक ना आंवडै जी॥

सावण सुरंगो लाग्यो भादवो जी, हांजी कोई रिमझिम पड़े हैं फुहार
तीज तिवारा घर नहीं बावड्या जी, ओजी म्हारा घणा कमाउ उमराव
थारी पियारी ने पलक ना आवडै जी॥

फिर–घिर महिनां भंवर जी आयग्या जी, हां जी ढोला हो गया बारा मांस
थारी धण महलां भंवर जी झुर रही जी, हां जी म्हारे चुड़ले रा सिंणगार
आच्छा पधार्‌या पूरब की नौकरी जी॥

ऊजड़ खेड़ा भंवरजी फिर बसे जी, हां जी ढोला निर्धन रे धन होय
जीवन गयां पीछे नाही बावड़े जी, हां जी थांने लिख हारी बारंबार
जल्दी घर आओ थारी धण एकली जी॥

जीवन सदा ना भंवर जी स्थिर र वे जी, हां जी ढोला फिरती घिरती छांव
कुंण का तो बाया मोती नीपजे जी, ओ जी थारी प्यारी जोव बाट
जल्दी पधारो गोरी रे देस म जी॥ स्थाई॥

मोको लाग लो

मोको लाग लो तो, दिन म तन बोल देऊंली
रात म किवार छैला, खोल देऊंली
खोल देऊंली र छैला, खोल देऊंली
रात म किवार छैला, खोल देऊंली

जोबण म्हारो झोला मार, कदर न जाण माँरूजी
आधी रात न आव भटकतो, पीकर देशी दारू जी
ल्यावलो बोतल तो, दारू ढ़ोळ देऊंली
रात म किवार ...

सूखा लाडू बासी भुजिया, खाया कोनी जाव ह
चौक र हलवाई रा पेड़ा, म्हानं धणा भाव ह
ल्यावलो रसगुल्ला तो, पुरो मोल देऊंली
रात म किवार ...

ढ़ोळिया की राखी हूं, नींवार दिन म खींच क
बालम म्हारो सोयो छैला, देखो घोड़ा बेच क
टेम से आवलो तो, पंपोळ देऊंली
रात म किवार ...

लाल घाघरो छत पर देख, समझी घर म स्याणो ह
हरी ओढ़णी सूख छत पर, थान छैला आणो ह
अंधेरा म भी आगळ, म टटोळ लेऊंली
रात म किवार ...

धरती-धौरांरी

आतो सूरगां न शर्माव, ईंपर देव रमण व आव,
ई रो जस नर-नारी, गाव-धरती धौरांरी, धरती-धौरांरी...
सूरज कण-कण न चमकाव, चन्दो अमृत रस बरसाव
तारा निछरावण कर जाव, धरती धौरांरी, धरती-धौरांरी...
पंछी मधुरा-मधुरा बोल, मिसरी मीठा सुर म घोळ
झीणो बायरियो पपौळ, धरती धौरांरी, धरती-धौरांरी...
ईंरो बीकाणो गरवीलो, हरो अलवर बड़ो हठिलो,
ईंरो सीकरियो भड़कीलो, धरती धौरांरी, धरती-धौरांरी...
ईंरा फल फूलण मन भावण, ईंरा धौरां आंगण आंगण
आ ह सगळा म बड़भागण, धरती धौरांरी, धरती-धौरांरी...
जयपुर नगरां री पटराणी, कोटा बूंदी कद अणजाणीं
चम्बल कैवे ईंरी कहाणी, धरती धौरांरी, धरती-धौरांरी...
काळा बादळिया गरणाव, बिरखा घूंघरिया चमकाव,
बिजळी डरती औळा खाव, धरती धौरांरी, धरती-धौरांरी...
ई पर तनरो मनतो वारां, ई पर जीवन प्राण उबारा
ई री ध्वजा उड़ै गिगनारां, धरती धौरांरी, धरती-धौरांरी...
ई रे सत री आण निभावां, इ रे तप ने नहीं लजावां
इ ने माथो भेंट चढ़ावां, धरती धौरांरी, धरती-धौरांरी...
ई रा कैंया भाग सरावां, ई रा मंगळ गीत सुणावां,
ई री धूल ललाट लगावां, धरती धौरांरी, धरती-धौरांरी...

Paint the canvas of your kitchen
with the colours of
Happiness & Good Health...

Caps

100% DEPENDABLE... That's our guarantee !

Introducing **MULTI UTILITY** chimneys with **FIVE** essential **APPLICATIONS** that keep your kitchen safe & hygienic and your work simple, fast & easy.

CHIMNEYS WITH APPS I R.O. WATER PURIFIER I HOBS I GAS STOVE I OTHER KITCHEN APPLIANCES

Trade enq. 9435146909
www.capsindia.in Toll Free: 1800 103 4646

Introducing **MULTI UTILITY** chimneys with **FIVE** essential **APPLICATIONS** that keep your kitchen safe & hygienic and your work simple, fast & easy.

CHIMNEYS WITH APPS I R.O. WATER PURIFIER I HOBS I GAS STOVE I OTHER KITCHEN APPLIANCES

Trade enq. 9435146909

www.capsindia.in Toll Free: 1800 103 4646

मुद्रक : पवन कुमार जाजोदिया, **शान्ति ऑफसेट**

बी. आर. फूकन रोड, कुमारपाड़ा, गुवाहाटी-781009, दूरभाष : 98640-27746, 0361-2480239